8 चार्ल्सटाउन से जोहनिसबर्ग

मोहनदास करमचन्द गांधी

(जन्म : सन् 1869 ई. : निधन : सन् 1948 ई.)

महात्मा गांधी का जन्म गुजरात के पोरबन्दर शहर में हुआ था। प्रारंभिक शिक्षा राजकोट में हुई। बैरिस्टरी की पढ़ाई उन्होंने इंग्लैण्ड में की तथा दक्षिण अफ्रिका में वकालत के लिए गये। वहाँ हिन्दुस्तानियाँ के अधिकार एवं स्वाभिमान के लिए लड़े। बाद में भारत आकर उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता की जंग छेड़ी और उनकी अगुवाई में भारत ने आज़ादी प्राप्त की। वे राष्ट्रपिता कहलाए।

'सत्यना प्रयोगो' गुजराती में लिखित उनकी आत्मकथा एक श्रेष्ठ कृति है, जो विश्व की अधिकतर भाषाओं में अनूदित हुई है। मेरा धर्म, सत्याग्रह, आश्रम का इतिहास, सर्वोदय, मेरे सपनों का भारत, मोहनमाला, हिन्द स्वराज्य, अनासक्तियोग, दक्षिण अफ्रिका सत्याग्रह का इतिहास, मंगल प्रभात आदि उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं।

प्रस्तुत कृति उनकी आत्मकथा का अंश है, इसमें चार्ल्सटाउन से जोहनिसबर्ग की यात्रा में गाँधीजी पर एक गोरे के द्वारा किए गए अमानुषिक व्यवहार का वर्णन है। उसका अपमानजनक पीड़ादायक व्यवहार तत्कालीन भारतीयों की हीन दशा का परिचायक है क्योंकि उस समय विदेशों में साधारण भारतीयों की स्थिति एक कुली के समान थी।

ट्रेन सुबह चार्ल्सटाउन पहुँचती थी। उन दिनों चार्ल्सटाउन से जोहनिसबर्ग पहुँचने के लिए ट्रेन नहीं थी। घोड़ों की सिकरम थी और बीच में एक रात स्टैण्डस्टन में रुकना पड़ता था। मेरे पास सिकरम का टिकट था। मेरे एक दिन देर से पहुँचने के कारण वह टिकट रद नहीं होता था। इसके सिवा अब्दुल्ला सेठ ने सिकरमवाले के नाम चार्ल्सटाउन के पते पर तार भी कर दिया था। पर उसे तो बहाना ही खोजना था, इसलिए मुझे निरा अजनबी समझकर उसने कहा, ''आपका टिकट तो रद हो चुका है।'' मैंने उचित उत्तर दिया। पर टिकट रद होने की बात तो मुझे दूसरे ही कारण से कही गयी थी। यात्री सब सिकरम के अन्दर ही बैठते थे। लेकिन मैं तो 'कुली' की गिनती में था। अजनबी दिखाई पड़ता था। इसलिए सिकरमवाले की नीयत यह थी कि मुझे गोरे यात्रियों के पास न बैठाना पड़े तो अच्छा हो। सिकरम के बाहर, अर्थात् कोचवान की बगल में दायें-बायें दो सीटें थीं। उनमें से एक पर सिकरम कंपनी का एक गोरा मुखिया बैठता था। वह अन्दर बैठा और मुझे कोचवान की बगल में बैठाया। मैं समझ गया कि यह निरा अन्याय है - अपमान है। पर मैंने इस अपमान को पी जाना उचित समझा। मैं जोर-जबरदस्ती से अन्दर बैठ सकूँ, ऐसी स्थिति थी ही नहीं। अगर तकरार में पड़ूँ, तो सिकरम चली जाये और मेरा एक दिन और टूट जाये; और फिर दूसरे दिन क्या हो, सो देव ही जानें! इसलिए मैं समझदारी से काम लेकर बाहर बैठ गया। पर मन में बहुत झुँझलाया।

लगभग तीन बजे सिकरम पारडीकोप पहुँची। अब उस गोरे मुखिया ने चाहा कि जहाँ मैं बैठा था, वहाँ वह बैठे। उसे सिगरेट पीनी थी। थोड़ी हवा भी खानी थी। इसलिए उसने एक मैला सा बोरा, जो वहीं कोचवान के पास पड़ा था, उठा लिया और पैर रखने के पटिये पर बिछाकर मुझसे कहा, ''सामी, तू यहाँ बैठ।'' मुझे कोचवान के पास बैठना है। मैं इस अपमान को सहने में असमर्थ था। इसलिए मैंने डरते-डरते उससे कहा, ''तुमने मुझे यहाँ बैठाया और मैंने वह अपमान सह लिया। मेरी जगह तो अन्दर थी, पर तुम अन्दर बैठ गये और मुझे यहाँ बैठाया। अब तुम्हें बाहर बैठने की इच्छा हुई है और सिगरेट पीनी है; इसलिए तुम मुझे अपने पैरों के पास बैठाना चाहते हो। मैं अन्दर जाने को तैयार हूँ, पर तुम्हारे पैरों के पास बैठने को तैयार नहीं।''

मैं मुश्किल से इतना कह पाया था कि मुझ पर तमाचों की वर्षा होने लगी; और वह गोरा मेरी बाँह पकड़कर मुझे नीचे खींचने लगा। बैठक के पास ही पीतल के सींखचे थे। मैंने भूत की तरह उन्हें पकड़ लिया और निश्चय किया कि कलाई चाहे उखड़ जाये, पर सींखचे न छोड़ूँगा। मुझ पर जो बीत रही थी, उसे अन्दर बैठे हुए यात्री देख रहे थे। वह गोरा मुझे गालियाँ दे रहा था; खींच रहा था; मार भी रहा था। पर मैं चुप था। वह बलवान था और मैं बलहीन। यात्रियों में कइयों को दया आयी और उनमें से कुछ बोल उठे : ''अरे भाई, उस बेचारे को वहाँ बैठा रहने दो। उसे नाहक मारो मत। उसकी बात सच है। वहाँ नहीं, तो उसे हमारे पास अन्दर बैठने दो'' गोरे ने कहा, ''हरगिज नहीं।'' पर थोड़ा शर्मिन्दा वह जरूर हुआ। अतएव उसने मुझे मारना बन्द कर दिया और मेरी बाँह छोड़ दी। दो-चार गालियाँ तो ज्यादा दीं। पर एक होटेण्टाट नौकर दूसरी तरफ बैठा था, उसे अपने पैरों

के सामने बैठाकर खुद बाहर बैठा। यात्री अन्दर बैठ गए। सीटी बजी। सिकरम चली। मेरी छाती तो धड़क ही रही थी। मुझे शक हो रहा था कि मैं जिन्दा मुकाम पर पहुँच सकूँगा या नहीं। वह गोरा मेरी ओर बराबर घूरता ही रहा। उँगुली दिखाकर बड़बड़ाता रहा, ''याद रख, स्टैण्डरस्टन पहुँचने दे, फिर तुझे मजा चखाऊँगा।'' मैं तो गूँगा ही बैठा रहा; और भगवान से अपनी रक्षा के लिए प्रार्थना करता रहा।

रात हुई। स्टैण्डस्टन पहुँचे। कई हिन्दुस्तानी चेहरे दिखाई दिये। मुझे कुछ तसल्ली हुई। नीचे उतरते ही हिन्दुस्तानी भाइयों ने कहा, ''हम आपको ईसा सेठ की दुकान पर ले जाने के लिए ही खड़े हैं। हमें दादा अब्दुला का तार मिला है।'' मैं बहुत खुश हुआ। उनके साथ सेठ ईसा हाजी सुमार की दुकान पर पहुँचा। सेठ और उनके मुनीम – गुमाश्तों ने मुझे चारों ओर से घेर लिया। मैंने अपनी बीती सुनायी। वे बहुत दुखी हुए और अपने कड़वे अनुभवों का वर्णन करके उन्होंने मुझे आश्वस्त किया। मैं सिकरम कम्पनी के एजेण्ट को अपने साथ हुए व्यवहार की जानकारी देना चाहता था। मैंने एजेण्ट के नाम चिट्ठी लिखी। उस गोरे ने जो धमकी दी थी, उसकी चर्चा की; और यह आश्वासन चाहा कि सुबह आगे की यात्रा शुरू होने पर मुझे दूसरे यात्रियों के पास अन्दर ही जगह दी जाए। चिट्ठी एजेण्ट को भेज दी। एजेण्ट ने मुझे सन्देशा भेजा – स्टैण्डस्टन से बड़ी सिकरम आती है और कोचवान वगैरह बदल जाते हैं। 'जिस आदमी के खिलाफ आपने शिकायत की है, वह कल नहीं रहेगा। आपको दूसरे यात्रियों के पास ही जगह मिलेगी।' इस संदेशे से मुझे थोड़ी बेफिकरी हुई। मुझे मारनेवाले उस गोरे पर किसी तरह का कोई मुकदमा चलाने का तो मैंने विचार ही नहीं किया था। इसलिए मार का यह प्रकरण यहीं समाप्त हो गया। सवेरे ईसा सेठ के लोग मुझे सिकरम पर ले गये। मुझे मुनासिब जगह मिली, और बिना किसी हैरानी मैं उस रात जोहनिसबर्ग पहुँच गया।

शब्दार्थ और टिप्पणी

कोचवान गाड़ीवान, गाड़ी चलाने वाला, **सींखचा** पकड़ने का कड़ा, हेंडल **तसल्ली** ढाढ़स, सांत्वना, आश्वासन **शिकायत** फरियाद **बेफिकरी** लापरवाही **सिकरम** घोड़ों से चलनेवाली एक प्रकार की बग्घी (घोड़ागाड़ी), **निरा अजनबी** बिल्कुल अपरिचित, अनजान **नीयत** इरादा **झुंझलाना** परेशान होना, बेचैन होना **बोरा** टाट की बनी अनाज भरने की थैली **नाहक** व्यर्थ, बेवजह **तसल्ली** राहत **होटेण्टाट नौकर** होटेण्टाट दक्षिण अफ्रीका की एक भाषा, होटेण्टाट भाषा बोलनेवाला नौकर **मुनीम** हिसाब-किताब रखनेवाला कर्मचारी **गुमाश्ता** किसी के लिए माल खरीदने और बेचनेवाला आदमी **मुनासिब** उचित, ठीक

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से चुनकर लिखिए :

(1) सिकरम किससे चलती थी?
(क) बैलों से (ख) घोड़ों से (ग) ऊँटों से (घ) गुलामों से

(2) गांधीजी को सिकरम में कहाँ बैठाया गया?
(क) यात्रियों के पास (ख) गोरे के पैरों में
(ग) कोचवान की बगल में (घ) सबके पीछे

(3) गोरा मुखिया बाहर निकल कर क्या करना चाहता था?
(क) पानी पीना चाहता था। (ख) कोफी पीना चाहता।
(ग) गांधीजी से झगड़ना चाहता था। (घ) सिगरेट पीना चाहता था।

(4) गाँधीजी भगवान से क्या प्रार्थना करते रहे?
(क) रक्षा के लिए (ख) देशवासियों के हक के लिए
(ग) जोहनिसबर्ग पहुँचने के लिए (घ) स्वतंत्रता के लिए

(5) दूसरे दिन गांधीजी को सिकरम में कहाँ जगह मिली?

(क) गाड़ीवान के पास (ख) यात्रियों के पास

(ग) गोरे मुखिया के पास (घ) एजेण्ट के पास

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखिए :

(1) जोहनिसबर्ग पहुँचने के लिए एक रात कहाँ रुकना पड़ता था?

(2) अब्दुल्ला सेठ ने किसे तार किया था?

(3) गांधीजी ने किसे अन्याय माना?

(4) गोरा अंगुली दिखाकर क्या बड़बड़ाता था?

(5) गांधीजी को क्या देखकर तसल्ली हुई?

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए :

(1) चार्ल्सटाउन से जोहनिसबर्ग कैसे पहुँचा जाता था?

(2) गोरा मुखिया कहाँ बैठता था?

(3) सिकरम पारडीकोप पहुँची तो गोरे मुखिया ने गांधीजी से क्या कहा?

(4) सहयात्रियों ने गांधीजी का पक्ष लेते हुए क्या कहा?

(5) हिन्दुस्तानी भाइयों ने गांधीजी से क्या कहा?

4. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पाँच-छः वाक्यों में उत्तर दीजिए :

(1) सिकरम का टिकट रद्द होने का रहस्य क्या था?

(2) गोरे मुखिया और गांधीजी के बीच झगड़ा क्यों हुआ?

(3) गांधीजी ने सिकरम कम्पनी के एजेन्ट को चिट्ठी क्यों लिखी? उसका क्या उत्तर प्राप्त हुआ?

योग्यता-विस्तार

(1) विद्यार्थी प्रवृत्ति : गाँधीजी के जीवन-दर्शन विषयक चित्रों की प्रदर्शनी लगाइए तथा छात्रों को बताइए।

(2) शिक्षक प्रवृत्ति : गाँधीजी की आत्मकथा 'सत्यना प्रयोगो' तथा दक्षिण अफ्रिका सत्याग्रह का इतिहास पढ़िए।